/

शम्भवे गुरवे नमः   परिपत्र–प्रथम

शिव शिष्य परिवार
शिव जन–जन के गुरू हैं।

स्थान :– रांची,झारखंड
मिति :– 15 जून ,08

प्रेषक : अभिनव आनन्द
संयोजक प्रमुख,
शिव शिष्य परिवार,
रांची, झारखंड।

सेवा में,

सभी प्रक्षेत्रीय/ क्षेत्रीय/ जिला/अनुमंडल/नगर/प्रखंड/ पंचायत /ग्राम एवं वार्ड शिव कार्य संयोजक/शिव चर्चा प्रभारी, उड़िसा/ उत्तरांचल/ छत्तीसगढ़/मध्य प्रदेश/ बिहार/ झारखंड/ बंगाल/ उत्तर प्रदेश/ दिल्ली/ हरियाणा/ पंजाब/ असम / जम्मू कश्मीर/गुजरात एवं अन्य।

विषय :– निवर्त्तमान संगोष्ठियों में अभिव्यक्त आध्यात्मिक विचार एवं पूर्व में लिए गये निर्णयों के परिप्रेक्ष्य में निबंधनोपरान्त शिव शिष्य परिवार के संकल्पों से स्वयेव एवं अपने क्षेत्र के अन्य गुरूभाई/बहनों को अवगत कराने के संबंध में।

प्रिय आत्मन्

उपर्युक्त विषय के सम्बंध में आप अवगत हैं कि शिव के गुरू स्वरूप की चर्चा वरेण्य गुरूभ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी के द्वारा वर्ष 1982 के अक्टूबर माह से बिहार के मधेपुरा शहर से प्रारंभ हुई। दीदी नीलम आनन्द को छोड़कर अन्य लोगों को शिव गुरू की अवधारणा से अवगत कराने का शुभारंभ हुआ। उत्तरोत्तर, शिव को गुरू मानने वाले शिष्यों/शिष्याओं की संख्या में वृद्धि होती गयी। विदित है कि वर्ष 1990 से अब तक शिव शिष्य परिवार द्वारा आयोजित संगोष्ठियों में लिए गये आवश्यक निर्णयों व उक्त संगोष्ठियों में वरेण्य गुरूभ्राता एवं दीदी नीलम आनन्द द्वारा दिये गये आध्यात्मिक उन्नयन के निमित्त मार्गदर्शनों को शिव शिष्य परिवार द्वारा निबंधनोपरान्त अंगीकार किया गया है। शिव शिष्य परिवार द्वारा शिव शिष्यों/शिष्याओं के आध्यात्मिक उन्नयन एवं जन मानस में शिव गुरू की व्याप्ति के निमित्त पूर्व से विभिन्न मार्गदर्शनों से जनमानस को अवगत कराया जाता रहा है। शिव शिष्य परिवार के निबंधनोपरान्त आहूत बैठकों व संगोष्ठियों में लिए गए निर्णय भी पूर्व मार्गदर्शनों के साथ समेकित किये गये हैं। सामान्यतः संगोष्ठियों के प्रथम दिन वरेण्य गुरूभ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी द्वारा प्रदत्त तीन सूत्रों, शिष्यानुभूति (हस्त पुस्तिका) के विभिन्न अंशों की जिज्ञासा एवं समाधान, भावदशा, मंत्र, तंत्र, यंत्र, कुंडलिनी साधना, शक्ति आराधना के विभिन्न स्वरूप की भूमिका इत्यादि पर वृहत् रूप से चर्चा होती

रही है। शिव शिष्य परिवार द्वारा शिव चर्चा एवं शिव कार्य हेतु कतिपय मार्गदर्शक सिद्धान्त संसूचित किये जाते हैं; जो निम्नरूपेण हैं :–

निर्णय

(1) गत वर्ष वरेण्य गुरुभ्राता द्वारा कहा गया था कि विगत 18 वर्षों से क्षेत्रों में शिव गुरु चर्चा हो रही है और अभी तक आधी आबादी को भी शिव शिष्य नहीं बनाया जा सका है जबकि पूरी दुनिया लक्ष्य है। लक्ष्य के प्रति हम अभी भी पूर्ण सजग नहीं हुए हैं । गुरुभाई/बहनों को इस दिशा में तत्पर होना चाहिए।

वरेण्य गुरुभ्राता द्वारा शिवादेश के अन्तर्गत शिव के गुरु स्वरूप की चर्चा पर बल दिया गया है ताकि एक–एक व्यक्ति का शिव के गुरु स्वरूप से जुड़ाव हो सके। उन्होंने लौकिक कार्यों के प्रति सचेत रहते हुए शिव कार्य के प्रति सजग, सचेष्ट एवं संवेदनशील होने को कहा है। शिव गुरु हैं, यह भारतीय जन मानस को मालूम है, अतएव गुरु का संदेश तो देना ही है, साथ ही साथ समझाना भी है कि शिव का शिष्य आसानी से हुआ जा सकता है। अहर्निश शिव चर्चा में तल्लीन शिव शिष्य/ शिष्याओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा है कि गुरु दया से उन्हें ऐसी गुरु चर्चा करनी चाहिए जो सुनने वालों के दिलोदिमाग में स्थायी रूप से शिव गुरु की समझ बना लें तभी उस व्यक्ति के कदम स्वतः गुरु की ओर बढ़ चलेंगे। उदाहरण के रूप में वरेण्य गुरुभ्राता ने कहा है कि गीत के बोल भले समाप्त हो जाएं किन्तु श्रोताओं के मन में उसकी गूंज सदैव बनी रहे; ऐसी ही गुरु चर्चा शिव शिष्यों को गुरु दया से करनी चाहिए।

(02) वरेण्य गुरुभ्राता के द्वारा "चर्चा अधिक खर्चा कम" की नीति अपनाते हुए शिव कार्य को विस्तारित करने का निर्देश पूर्व में भी दिया गया है, साथ ही साथ आय–व्यय के संदर्भ में समय–समय पर उचित परामर्श आयोजित संगोष्ठियों एवं परिचर्चाओं के माध्यम से दिया जाता रहा है फिर भी क्षेत्रीय/ जिला शिव कार्य संयोजकों अथवा आयोजकों द्वारा इसे गंभीरता से नहीं लिया जाना खेद का विषय है। शिव शिष्य परिवार अपने निबंधनोपरान्त अनुरोध करता है कि अगर शेष राशि बचती है तो उसे शिव शिष्य परिवार के खाते में जमा करना श्रेयस्कर है ताकि उक्त राशि का सदुपयोग हो सके।

(03) निर्णय लिया गया है कि महोत्सव/परिचर्चाओं के आयोजन की सफलता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से स्थानीय गुरु – भाई एवं बहनों की उस कार्यक्रम के लिए एक "परिचर्चा/महोत्सव आयोजन समिति" बना ली जाय अथवा एक व्यक्ति को ही प्रभारी बनाया जाय जो आयोजन के पूर्व एवं बाद तक की संपूर्ण जिम्मेवारी का वहन करे। समिति यह भी सुनिश्चित करेगी कि आयोजनों के लिए एकत्रित राशि का लेखा–जोखा एक पंजी में संधारित किया जाय। शनैः शनैः अब शिव शिष्य परिवार यथासंभव अपनी व्यवस्था एवं साधनों के अनुरूप विभिन्न कार्यक्रमों की पूर्ण व्यवस्था का अनुश्रवण करेगा।

(04) शिव शिष्य परिवार के द्वारा विगत कई वर्षों से मौखिक एवं लिखित रूप से लगातार अनुरोध किया जा रहा है कि शिव गुरु महोत्सव/परिचर्चाओं में न्यूनतम राशि व्यय की जाय। विचारणीय है कि आय–व्यय में पारदर्शिता नहीं रखने पर शिव शिष्यता की छवि धूमिल होती है। अनुरोध है कि सभी शिव शिष्य एवं शिष्याएं आयोजनों के आय–व्यय के मामले में पारदर्शिता सुनिश्चित करें एवं कार्यक्रमों के आयोजकगण स्थापित नियमों के अनुरूप आय–व्यय का लेखा संधारित करें अन्यथा जनमानस में शिव के गुरु स्वरूप के प्रचार–प्रसार पर

प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। वरेण्य गुरुभ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी द्वारा इस आलोक में गहरी चिन्ता व्यक्त की जाती रही है। कहा गया है कि हमारे किसी भी कार्य से शिव गुरु स्वरूप के प्रचार–प्रसार में यदि प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तो ऐसा माना जाना चाहिए कि हम सबों के गुरु शिव की अप्रसन्नता का यह कारण हो सकता है।

किसी भी परिस्थिति में इसका अनुपालन नहीं करने पर यदि मुख्यालय को प्रतिवेदन प्राप्त होता है तो संबंधित संयोजकों को उनके पद के दायित्व से मुक्त किया जा सकेगा। साप्ताहिक /दैनिक/लघु परिचर्चाओं में राशि व्यय करने की परंपरा उचित नहीं है। यह परंपरा जनसामान्य को दैनिक/लघु/साप्ताहिक परिचर्चाओं को आयोजित करने में बाधक हो जाएगी।

शिव–शिष्य परिवार मुख्यालय साधनरहित एवं सीमित साधनों के कारण अपने स्तर से महोत्सव/परिचर्चा/संगोष्ठी आदि कार्यक्रमों को आयोजित नहीं कर पाता है। कोई भी कार्यक्रम स्थानीय गुरुभाई बहनों के द्वारा आयोजित होते हैं और मुख्यालय से जुड़े गुरुभाई–बहन भी उसमें यथा संभव आर्थिक सहयोग देते हैं, ऐसी परिस्थिति में उल्लिखित किसी कार्यक्रम के आय–व्यय के लेखा संधारण में पारदर्शिता अपेक्षित है।

(05) शिव गुरु महोत्सव/परिचर्चाओं में अत्यधिक संख्या में व्यापारीगण कंकण, रुद्राक्ष की माला, अन्य देवताओं की तस्वीरों के साथ वरेण्य गुरु भ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी एवं दीदी नीलम आनन्द जी की तस्वीर, कैसेट,शिव चर्चा नामक भ्रामक तथा बेकार विभिन्न किताबों आदि के विक्रय के निमित्त दुकानें लगा देते हैं और कार्यक्रम में आगत गुरु भाइयों/बहनों के पैसे स्वाभाविक आकर्षण के कारण अनावश्यक व्यय हो जाते हैं । शिव–शिष्य परिवार ऐसा मानता है कि कार्यक्रम में आये गुरुभाई/बहनों के स्वाभाविक धार्मिक आकर्षण के कारण उनका आर्थिक दोहन हो रहा है। वरेण्य गुरु भ्राता द्वारा इस बिन्दु पर प्रतिक्रिया पूर्व में भी व्यक्त की गई है किन्तु सुधार परिलक्षित नहीं हो रहा है। वरेण्य गुरु भ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी के द्वारा इस बिन्दु पर स्पष्ट किया गया है कि जब महादेव और अन्य देवी–देवताओं की तस्वीरों की घर–घर में व्याप्ति है तब भी इन्सानियत विलुप्त होती जा रही है, ऐसी परिस्थिति में श्री हरीन्द्रानन्द जी एवं दीदी नीलम आनन्द की तस्वीरों के प्रयोग का क्या प्रभाव हो सकता है ? आज आवश्यकता है शिव के गुरु स्वरुप से जनमानस का जुड़ाव सुनिश्चित किया जाए। वरेण्य गुरु भ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी द्वारा धड़ल्ले से हो रहे शिव चर्चा के नाम पर बेकार वस्तुओं के क्रय–विक्रय पर आपत्ति व्यक्त करते हुए बताया गया कि यह अर्थोपार्जन के उद्देश्य से शिव–शिष्यता की छवि धूमिल करने का प्रयास है। ऐसे लोगों को समझाने का प्रयास किया जाना चाहिए क्योंकि नासमझी में उत्पन्न श्रद्धा के तहत भी कुछ लोग ऐसा कर सकते हैं ।

क – कलाई में बारह दाने के रूद्राक्ष कंकण की परम्परा तो चली किन्तु अब परिचर्चा स्थलों पर कलाई के कंकण के अलावा एक सौ आठ दाने के रूद्राक्ष की माला के क्रय–विक्रय के निमित्त सैकड़ों दुकानें पायी जाती हैं । आप जानते हैं कि महोत्सवों/परिचर्चाओं में व्यापारिक मानसिकता को रोकने के कारण निवर्त्तमान काल में कतिपय नामीगिरामी शिव–शिष्य भी विरोध में खड़े हो गए तथापि अब कंकण सामान्यतः पाँच से दस रुपये में व्यापारियों द्वारा बेचे जा रहे हैं ।

ख – वरेण्य गुरु भ्राता द्वारा गुरुभाईयों एवं गुरुबहनों को सचेत रहने का संकेत पूर्व में भी दिया गया था एवं कहा गया था कि अर्थादोहन की प्रक्रिया का सर्वथा प्रेमपूर्ण विरोध अपेक्षित है ।

ग – महोत्सव स्थल एवं महोत्सव/परिचर्चा स्थल से जुड़े रास्तों पर दुकानें नहीं लगायी जॉय ताकि आवागमन तथा व्यवस्था बाधित नहीं हो।

(06) ऐसा पाया गया है कि शिव गुरु परिचर्चाओं/महोत्सवों में गुरु चर्चा करने वाले गुरु भाई/बहन अपनी चर्चा के समय का उपयोग वरेण्य गुरु भ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी की चर्चा में ही कर लेते हैं। वक्ताओं को यह ध्यान रखना चाहिए कि महोत्सव/परिचर्चा का मंच शिव गुरु से जनमानस को जोड़ने के निमित्त होता है। यह मान्य है कि शिव गुरु से जुड़ाव के सही मार्गदर्शन हेतु जन सामान्य को वरेण्य गुरु भ्राता के विषय में जानकारी दी जाय तथापि शिव गुरु परिचर्चा के मंच का अधिकांशतः प्रयोग शिव के गुरु स्वरूप से जन मानस के जुड़ाव के प्रयोजनार्थ ही होना चाहिए ।

(07) सभी गुरुभाई/बहनों को शिव के गुरू स्वरूप से प्रत्येक व्यक्ति के जुड़ाव के निमित्त की ओर अग्रसर होना है। इस प्रयोजन के निमित्त किसी भी प्रकार के सुझाव, दिशानिर्देश आदि के हेतु वरेण्य गुरुभ्राता से मिलने के लिए समय एवं पूर्वानुमति प्राप्त कर लें। आध्यात्मिक अवधारणा के अलावा अन्य बातों के लिये वरेण्य गुरूभ्राता से कृपया नहीं मिलें।

(08) परिचर्चाओं / महोत्सवों में, जिसमें अधिकाधिक भीड़ की संभावना हो, छोटे बच्चे–बच्चियों को साथ में नहीं लाया जाए। पाया गया है कि बच्चे रहते हैं और अभिभावक (माता–पिता) खो जाते हैं। ऐसी स्थिति में आगत परेशान होते ही हैं आयोजकों को भी परेशान कर बैठते हैं। इस संदर्भ में समय–समय पर बच्चों को न लाए जाने की एवं उनपर खास नजर की उद्घोषणा की जाती है एवं अलग से एक सहायता केंद्र भी महोत्सव स्थल पर काम करता है तथापि इस पर ध्यान देने की जरूरत है। शिव शिष्य परिवार बच्चों/सामग्रियों के खोने का उत्तरदायित्व वहन नही करेगा। कार्यक्रम परिसर में आयोजनकर्त्ता गुरू भाई एवं बहनों के माध्यम से शांति–सुरक्षा की व्यवस्था कृपया रखें।

(09) परिचर्चा / महोत्सव वास्तव में आध्यत्मिक आयोजन है। पंथ, धर्म, स्थान, जाति, वर्गादि से परे है। परिचर्चा स्थल पर आध्यात्मिक परिवेश बनाया जाय। सादगी और शांति रखी जाय।

(10) संगोष्ठियों में लिए गए निर्णय, "शिव जन–जन के गुरु हैं और पूरी दुनिया उनका शिष्य हो जाए," इसके प्रयोजनार्थ लिए जाते रहे हैं परन्तु जब व्यक्ति का मन गुरु की ओर से चलने लगता है तो यही शिष्य भाव की स्थिति होती है और किन्ही नियमों व निदेशों की आवश्यकता नहीं रह जाती। गुरु दया से स्वतःस्फूर्त शिष्य मन गुरु आदेश के अनुपालन की ओर सतत सचेष्ट, सजग और संवेदनशील बना रहता है। गुरु शिष्य संबंधों के प्रेम के पुष्प की सुरभि पूरे जगत को सुगंधित कर देती है।

(11) शिव शिष्य परिवार की साप्ताहिक/दैनिक परिचर्चा केन्द्रों पर अधिकतम 50 व्यक्ति ही सम्मिलित हों ताकि लाउडस्पीकर का प्रयोग आवश्यक न हो। साप्ताहिक/दैनिक परिचर्चाओं में लाउडस्पीकर लगाने की आवश्यकता हो तो नियमानुसार प्रशासन से अनुमति प्राप्त कर ली जाए। कृपया इसे अत्यावश्यक समझा जाए। शिव शिष्य परिवार विधिमान्य नियमों के उल्लंघन का उत्तरदायित्व वहन नहीं करेगा।

(12) यह ध्यान में सदैव रखे कि शिव गुरु चर्चा के निमित्त किसी भी व्यक्ति को कोई राशि किसी भी परिस्थिति में देय नहीं होगी। केवल मार्ग व्यय विशेष परिस्थिति में प्रक्षेत्रीय/क्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक की अनुमति से परिचर्चा कर्त्ता अथवा भजन कर्त्ता को देय हो सकेगा।

" श्री हरीन्द्रानन्द जी द्वारा यह स्पष्ट घोषणा की गयी है कि शिव की शिष्यता में प्रारम्भ से लेकर अन्त तक एक पैसे खर्च का कोई अर्थ नहीं है "।

भजनों का समावेश शिव गुरू चर्चा के समय को कम कर देता है अतएव इसे न्यून किया जाए। आप जानते हैं कि भजन– कीर्त्तन–प्रवचन का आज के मानव–मन पर स्थायी प्रभाव नहीं हो पाता है।

(13) महोत्सवों/परिचर्चाओं में यदा–कदा पाया गया है कि जब किसी गुरुभाई/बहन की चर्चा चल रही होती है तो उस दौरान कुछ शिव– शिष्य आपस में अनावश्यक बातें करते रहते हैं। इस संबंध में कोई निर्देश नहीं दिया जा रहा है किन्तु अनुरोध है कि हम सबों को यह समझना चाहिए कि शिव गुरु की चर्चा भले ही कोई करे, आपस में अनावश्यक बातें करना गुरु कार्य के प्रति संवेदनशील नहीं होना है।

(14) महोत्सवों/परिचर्चाओं में वक्ता को यह बात ध्यान में रखनी होगी कि शिव गुरु के मंच से की जाने वाली चर्चा/परिचर्चा शिव गुरु की ही परिधि में चले एवं गुरु चर्चा के क्रम में किसी अन्य गुरु या देवता की चर्चा करने की बाध्यता हो जाए तो उसकी सादर स्वस्थ समीक्षा ही की जाय क्योंकि शिव–शिष्यों की मान्यता है कि अन्य रेखाओं के अस्तित्व के उपरान्त भी उनसे बड़ी रेखा खींची जा सकती है। ऐसा करने के क्रम में वक्ताओं द्वारा व्यक्त ऐसे विचार जो शिव गुरु की अवधारणा की परिधि से बाहर हों, पूर्णतः निजी होंगे और शिव शिष्य परिवार ऐसे विचारों से सहमत होने को कतई बाध्य नहीं हो सकेगा। उक्त निर्णय पूर्व में भी परिचालित किया गया था।

(15) यह निर्णय पूर्व में भी परिचालित किया गया था कि शिव चर्चाओं से संबंधित सभी कार्यक्रम रात्रि 8 बजे तक समाप्त कर दिये जाएं।

ध्यान रखा जाय कि निर्दिष्ट शिव कार्य के अलावा किसी गुरूभाई/बहन के द्वारा व्यक्त किए गए कोई विचार अथवा किए गये किसी भी कृत्य का उत्तरदायी एवं सहभागी शिव शिष्य परिवार एवं अन्य गुरूभाई/बहन नही होंगे।

(16) शिव चर्चा गुरु आदेशित कर्म है ताकि एक–एक व्यक्ति शिव के गुरु स्वरूप से सचमुच में अपना जुड़ाव कर सके। संसार के एक–एक व्यक्ति को शिव भाव की परिधि में समेटने का उद्देश्य रखने वाले को अपने दिल दिमाग का दरवाजा खोलना होगा। वरेण्य गुरूभ्राता की यह उक्ति कि "कोई छूटे नहीं कोई टूटे नहीं" को वास्तव में चरितार्थ करने की चेष्टा होनी चाहिए। शिव तो साँपों को गले लगाते हैं, जो जन्मजात जहर रखते हैं और टेढ़ा चलते हैं। इन्सान तो जन्मजात न तो जहर रखता है और न ही टेढ़ा चलता है। शिव चिदानन्दमूर्त्ति हैं, विश्वमूर्ति हैं और इन्सान अब इन्सानियत की मूर्ति भी नहीं रह गया है। हम सबों के गुरु एवं आदर्श शिव हैं, अतएव हमारा आपका आचरण भी शिव जैसा होना चाहिए। शिव के शिष्य शिव का संदेश सुनाते हैं और समझाते हैं। हम सबों को चाहिये कि कम से कम शिव शिष्यता एवं शिव कार्य में शिव का प्रतिनिधित्व करें और शिव का ही आचरण प्रस्तुत करें। सम्प्रदाय, जातिवाद, क्षेत्रवाद आदि घटिया बातों से अपने को सचमुच में अलग रखें।

(17) निर्णीत हुआ है कि मुख्यालय निर्माण/स्थापना एवं आनुषांगिक व्यवस्था को कार्य रूप दिया जाए। कार्य रूप देने हेतु शिव शिष्य परिवार द्वारा समुचित निर्णय लिया जाएगा।

(18) पाया जा रहा है कि आयोजनों में अत्यंत छोटी–छोटी बातों को लेकर यदा–कदा कतिपय आपसी मतभेद हो जाया करते हैं। इसका निष्पादन एवं निपटारा "परिचर्चा आयोजन समिति" अथवा जिला शिव कार्य संयोजक अथवा क्षेत्रीय शिव कार्य संयोजक ही कर लिया करें। यह स्पष्ट है कि इन विवादों एवं निपटारों से श्री हरीन्द्रानन्द जी तथा आमंत्रित गुरु भाईयों को कुछ भी लेना–देना नहीं है। यदि शिव शिष्य परिवार मुख्यालय को किसी विवाद की सूचना मिलती है तो शिव शिष्य परिवार विधिमान्य कार्रवाई कर सकेगा।

(19) वरेण्य गुरु भ्राता श्री हरीन्द्रानन्द जी के द्वारा संगोष्ठियों को संबोधित करते हुए समस्त शिव–शिष्यों/शिष्याओं से पुनः अनुरोध किया गया है कि शिव गुरु की विचार धारा से संसार के एक – एक व्यक्ति को जोड़कर शिव का शिष्य होने के लिए प्रेरित किया जाय। कहा जाता है कि प्रेमावस्था की पहली सीढ़ी भावावस्था है। शिव गुरु और उनकी शिष्यता की पावन प्रेमावस्था के पूर्व उनकी शिष्यता का सतत भाव सलिल शिष्य में प्रवाहित होता रहता है। शिव शिष्यता का संकल्प गुरु चर्चा के साधन मात्र से प्रेमाकाश में प्रवेश के पूर्व इसी भाव सलिल से सतत् भावित होता रहता है।

शिव शिष्यों का दायित्व है कि एक–एक व्यक्ति को शिव–शिष्यता से जोड़ते हुए शिव गुरु सत्ता के पावन प्रेमाकाश में प्रवेश की स्थिति सुनिश्चित करें ताकि व्यक्ति का शिष्यत्व शिवत्व में रुपांतरित हो जाए।

(20) वरेण्य गुरु भ्राता के द्वारा यह भी कहा गया है कि महिलाओं के सरल स्वभाव के कारण पूजा–पाठ के नाम पर उन्हें बेवकूफ बनाने का सिलसिला लम्बे अरसे से चला आ रहा है। शिव शिष्य/ शिष्याओं की करोड़ से अधिक संख्या होने के कारण यह भी संभव है कि शिव शिष्यता का रंगा सियार बन कर कोई व्यक्ति गुरु भाई/बहनों को शिव गुरु के या वरेण्य गुरुभ्राता के नाम पर बेवकूफ बनाकर धन एकत्रित करने की कुचेष्टा करे। इस दिशा में सावधान रहने की जरूरत है। *आपके गुरु शिव शरीर में उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए उन्हें किसी धन की या भौतिक दक्षिणा की जरूरत नहीं है। गुरु शिष्य का सम्बन्ध प्रेम का होता है इसमें पैसे का कोई उपयोग नहीं है।* यह याद रखना चाहिए कि शिव का शिष्य होने के लिए एक अधेला भी खर्च नहीं होता है। संसार के किसी व्यक्ति को शिव का शिष्य होने की घोषणा करने अथवा शिव चर्चा कर दूसरों को शिव की शिष्यता की ओर अग्रसर कराने हेतु भौतिक सामग्रियाँ /पैसे (धन) प्राप्त करने का कतई अधिकार नहीं हैं।

(21) कतिपय नये स्थानों से शिव गुरू परिचर्चा/महोत्सवों में विशेष कर भजन–कीर्तन के समय कुछ नये आगन्तुक लोग कभी कभी झूमने लगते हैं, जिसे लोक भाषा में भूतखेली अथवा प्रेतबाधा की संज्ञा दी जाती है। शिव शिष्यों का मानना है कि यह कमजोर मन का परिचायक है। किसी का भी मन जब मजबूत मन के साथ रहता है तो बलशाली होता है। शिव को महेश्वर कहा गया है और वे समस्त शक्तिओं के जनक हैं। शिव सर्वोच्च गुरू भी हैं अतएव उनकी चर्चा – परिचर्चा में तल्लीन व्यक्ति का मन धीरे धीरे सूक्ष्म और बलशाली होने लगता है। ऐसे कमजोर मन वाले व्यक्तियों को यदि शिव गुरू चर्चा करने को प्रेरित किया जाय और वे शिव गुरू चर्चा में तत्पर हों तो ये छोटी छोटी बाधाएं स्वतः नष्ट हो

जायेंगी। ऐसा पाया भी गया है कि जैसे जैसे शिव गुरू चर्चा की ओर लोग प्रेरित हुए हैं उनकी ये बाधाएं स्वतः तिरोहित हो गयी हैं। वैसे, इन चीजों से शिव शिष्यता का कोई संबंध नहीं है। शिव शिष्यता एक अनुकरणीय, आध्यात्मिक, परिणामपरक एवं दया से सर्वदा आद्र विचार है, जो व्यक्ति को शनैः शनैः शिवबोध में ले जाती हैं।

(22) सभी को ज्ञात है कि शिव गुरू चर्चा गुरू आदेशित कर्म है। शिव जगत के गुरू हैं अतः जगत का एक एक व्यक्ति सहजता से शिव का शिष्य हो सकता है। शिव का शिष्य होने के निमित्त संसार के किसी व्यक्ति/सत्ता से पूर्वानुमति प्राप्त करने की आश्यकता नहीं है। शिव शिष्यता में धर्म, वर्ण, वर्ग, स्थान, जाति, भाषा, अमीर–गरीब इत्यादि का न तो कोई भेद है न ही कोई वर्जना है।

जगत गुरू शिव के गुरू स्वरूप की चर्चा का उद्देश्य केवल चर्चा करना नहीं है अपितु यह दूसरों के मन में शिव के गुरू स्वरूप को प्रतिष्ठित करने की विधा है ताकि दूसरों का मन शिव को गुरू समझ कर शिष्य होने की ओर अग्रसर हो।

यह गुरू आदेशित कर्म है अतएव प्रत्येक व्यक्ति का यह जन्म सिद्ध अधिकार है कि वह शिव को अपना गुरू बनाये और संसार के किसी स्थान में रहने वाले व्यक्ति/समूह को शिव की शिष्यता की ओर प्रेरित करे। हम सबों को चाहिए कि कोई भी व्यक्ति /समूह यदि शिव गुरू की चर्चा किसी भी स्थान पर करता हो तो उसे यथासंभव सहयोग दें ऐसा नहीं कि उसके इस कार्य में किसी प्रकार का अवरोध पैदा करें। यदि शिव गुरू चर्चा में किसी की बदनीयती हो तो उसे समझाने का प्रयास करना चाहिए। क्षेत्रवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद आदि; जैसी सीमारेखा का शिव शिष्यता में कोई स्थान नहीं है।

(23) शिव शिष्य परिवार अर्थाभाव के कारण भी क्षेत्रों के अनेकानेक कार्यक्रमों का अनुश्रवण नहीं कर पा रहा है। इस कार्य हेतु सूचना एवं साधन का भी अभाव है। शिव शिष्य एवं शिष्याओं की विगत कई वर्षों से इतनी अधिक संख्या है कि एक–एक व्यक्ति के कथनी–करनी एवं कार्यकलापों पर किसी भी संस्था/संगठन/समूह का नियंत्रण संभव नहीं है तथापि शिव शिष्य परिवार शिव की शिष्यता को पूर्णतः आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान करने के निमित्त कृत संकल्प है।

(24) शिव शिष्य परिवार द्वारा इस बिन्दु पर भी विचार किया गया है कि शिव शिष्य परिवार के नाम से छद्म भेषी कतिपय लोग अर्थोपार्जन एवं ठगी का घृणित कार्य कर रहे हैं। शिव शिष्य परिवार द्वारा संगोष्ठियों एवं अनुरोध पत्रों आदि के माध्यम से ठगी से बचने हेतु कहा जाता रहा है। शिव शिष्य परिवार निरूपाय होकर इस कृत्य पर क्षोभ व्यक्त करता है।

(25) ध्यान रखा जाना चाहिए कि शिव गुरू महोत्सवों/परिचर्चाओं के आयोजन के पूर्व प्रचार प्रसार के निमित्त किये जाने वाले कार्य, यथा, वाल पेंटिंग/राईटिंग, बैनर, स्वागत द्वार इत्यादि विधिमान्य प्रशासनिक अनुमति के उपरान्त ही किये जायें। ध्यान रखना चाहिए कि सरकारी भवनों, सड़कों,दीवारों व अन्य सरकारी संपत्तियों पर वाल पेंटिंग/राईटिंग न की जाय। निजी भवनों,स्थलों तथा दीवारों पर भू–स्वामी की अनुमति से ही दीवारों पर आध्यात्मिक वाक्य लिखे जा सकते हैं। शिव शिष्य परिवार विधिमान्य नियमों के उल्लंघन का उत्तरदायित्व वहन नहीं करता है।

(26) पहले पाँच या पाँच से अधिक लोग एकत्रित होकर शिव शिष्यता की घोषणा करते थे, अब एक व्यक्ति भी किसी की घोषणा उसकी इच्छा के उपरान्त कर सकता है। वरेण्य गुरूभ्राता ने कहा है कि जो लोग शिव को अपना गुरु बनाना चाहते हैं उन्हें भी स्वयं अपने नाम की घोषणा करने का अधिकार है। वरेण्य गुरुभ्राता द्वारा स्पष्ट किया गया है कि शिव शिष्यता ग्रहण करने अथवा शिव का शिष्य होने के लिए दूसरों के पास जाने की जरूरत नहीं है। संसार का कोई आदमी खुद ही शिव को गुरु बनाकर अपना आध्यात्मिक एवं लौकिक उन्नयन कर सकता है।

(27) महोत्सवों/परिचर्चाओं/संगोष्ठियों/विभिन्न कार्यक्रमों में विधि व्यवस्था के निमित्त स्थानीय/जिला प्रशासन को निश्चित रूप से सूचित किया जाय एवं सहयोग प्राप्त करने का प्रयास किया जाय। कार्यक्रमों में महिलाओं की संख्यां अधिक रहती है इस तथ्य से भी प्रशासन को अवगत कराया जाय तथा जिन पहलुओं पर प्रशासनिक अनुमति की आवश्यकता हो उसे लिखित रूप से प्राप्त कर लिया जाय।

इस दायित्व का निर्वहन कार्यक्रम के आयोजक करेंगे। स्थापित सरकारी नियमों के उल्लंघन के लिए कार्यक्रमों के आयोजक उत्तरदायी होंगे। सूचना रहने पर प्रक्षेत्रीय/क्षेत्रीय/जिला/ अनुमंडल/स्थानीय शिव कार्य संयोजक/प्रभारी भी कृपया इस दायित्व का वहन करेंगे। खुले आसमान के नीचे कार्यक्रमों को आयोजित करना श्रेयस्कर है।

यदि वरेण्य गुरूभ्राता/अध्यक्ष/सचिव/उपाध्यक्ष, शिव शिष्य परिवार अथवा किसी गणमान्य शिव शिष्य/शिष्या को आमंत्रित किया गया हो तो कार्यक्रम करने की सभी वांछित प्रशासनिक अनुमति के पत्रों की छाया प्रतियाँ शिव शिष्य परिवार को एक पक्ष पहले हस्तगत करा दी जाय अन्यथा सूचना प्राप्त होने पर शिव शिष्य परिवार आमंत्रित व्यक्ति को उक्त कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं होने का अनुरोध करेगा अथवा संबद्ध आयोजकों/संयोजकों/प्रभारियों के विरूद्ध यथासंभव अपेक्षित कार्रवाई हेतु स्वतंत्र होगा।

हम सभी दक्षिणामूर्ति पंचानन शिव, जो परम सत्ता के वाच्य हैं, उनके शिष्य के रूप में ज्ञानदीप की अवली से इस वसुन्धरा को आलोकित करने का संकल्प लेते हैं ताकि मानवी सृष्टि करूणामय, सुखमय और शिवमय हो सके।

ह0/–

(अभिनव आनन्द)
संयोजक प्रमुख

प्रतिलिपि शिव शिष्य परिवार के माननीय अध्यक्ष/उपाध्यक्ष/कार्यकारिणी समिति एवं आम सभा के सभी सदस्यों को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।

ह0/–

(अभिनव आनन्द)
संयोजक प्रमुख